इक्ष्वाकु से

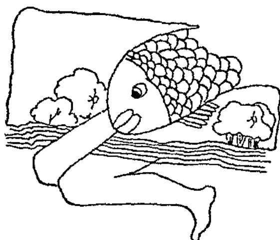
(एक लम्बी कविता)

मूल्य तीस रुपये
संस्करण 1988
प्रकाशक दिशा प्रकाशन, 138/16 त्रिनगर दिल्ली 35
आवरण हरिप्रकाश त्यागी
मुद्रक कमल प्रिंटर्स 9/5866 गांधीनगर दिल्ली-31

IKSHVAKU SE (A long poem)
by Maharaj Krishan Kav Price Rs 30 00

राज के लिए

इक्ष्वाकु से



तुम्हे जब मैं 'तुम' कहूगा
तो मत होना नाराज
'तुम' के सहारे
बोल रहा हूँ
मैं अपने ही से

क्या कविता नही है स्वय से एक बातचीत ?
होती रहती जो दिन रात
कुड कुड कुड
भीतर ही भीतर
उसी का मूर्त्त आकार
मेरे मन का मूक विलाप

पढी है कभी खुशी की कविता
उस समय तो खुशी से
नही होती फुसत
वह व्यक्ति जीता है
घूट घूट जिंदगी
पीता है

तो समझ लो, दोस्त
इस वक्त मैं जी नही रहा
कर रहा जिए हुए की जुगाली

अह की छाती के घावा पर
लगा रहा सभ्य गालिया का मरहम,
जिस व्यवस्था को बदल नही पाता
उसी पर कर रहा कागजी मार
रहस्यमय जीवन के गुह्यतम अथ
न समझ पाने की लाचारी को
छिपा रहा हूँ शब्दो मे

लगगा कई बार
कर रहा हूँ कुछ नया
गौर से सुनो
कही थी मैंन
ऐसी ही बात
इक्ष्वाकु से।



अतीत की काली सच्चाई पर
स्मति का रुपहला लिबास सजाकर
कहते हो तुम
अच्छा था औरगजेब का जमाना

भूल जाते हो
यादा की अँधेरी सुरग मे

सुन पडा रहना है सब

औरगजेब की रियाया मे भी
कोसते थे तुम वतमान को

हुए हो हर युग म
ही साक्षी
हर आहट हर करवट के
और हमेशा
एक रोदू बच्चे की तरह
बहती सिडकती नाक लिए
पढत रहे वतमान का मसिया

क्या अतीत था उसे पता
दखते रगीन ऐनक से
और जब
पसद नही आता
ता इच्छानुसार
बदल देते एनक



याद करो बचपन
गली कूचो की किलकारियाँ
गूजती नही कानो म ?

मदिर का विशाल प्रागण
आर कतार म खडे

स्वयंसेवक की छाती पर
लकड़ी की खड़ाऊँ बजाता
निकरधारी संरसंघचालक ?

किनारों से टँगे
डूबते-उभरते डूंगे
तीर-सी सरसराती नाव

शिशुदेह पर उँडेलती
ठंडे पानी की गड़वी
सिहरन सिहरन महलाती
सारा मुहल्ला

कई बार चाहा है तुमने,
ज़िम्मेदारियों का बोझ
कंधों से उचकाकर
फिर बच्चा बन जाना

नज़र आती सिर्फ
उन्मुक्तता
चंचल इंद्रियों की



मगर तुम भुला बैठे हो
भुतहे अँधेरे का भय
दबोचने की ताक में
रहता जो

मिट्टीपुती सीढियो पर

बडे, जो सदा तुमसे बडे ही रहे
कभी चूमते
कभी पीटते
पुचकारते, फुफकारते
मीठी नीद सुलाते
मीठी मीठी नीद से जगाते
लौह-बाहो मे भीचते
मारते इस्पाती-थप्पड
समझ चाबी लगा खिलौना
खेलते एकतरफा खेल

कितनी कितनी बार
भिचती तुम्हारी मुट्ठियाँ
काश ! मुझमे ताक्त होती
मैं भी इंट मारता
मूछो को देकर ताव
खुरदरी शेव पर मुलायम साबुन लगा
कपिल देव सा कहता,
"पामालिव दा जवाब नही'

काश ! मैं लम्बा होता, सिटकनी खोलता
छिपाई मिठाई खोसता
निलज्ज पेट मे मेवा ठूसता
काश ! मैं बडा होता
क्या याद है तुम्हे ?
होता अगर याद
तो अपने बच्चो का तुम

खिलौना न बनाते

कुछ नही है याद
मन के अधकारमय कोना मे
सहज रखा है झूठे सपना को
और भुला दिया है
वह खट्टा मीठा सच
दौडता था जो
बचपन की धमनियो म



सच कभी पुराना नही पडता
सच पडता है पुराना एक पल म

विवस्वान ने मुझसे
और मैंने इक्ष्वाकु से
कहा था जो सच
पुराना था वह
जितना विवस्वान
मगर आज का मेरा सच
नया है इस प्रात की
प्रथम किरण-सा

मर कहे को मे
बैठ मत जाना
कहा था जो मैंने
इक्ष्वाकु से कहा था

और तुम नहीं हो इक्ष्वाकु

पुरातनपंथी पोथों मे
छप जवाबों को
पढते पूर्वाग्रह के लेंस से
सच की खोज के लिए

उन मरी हुई किताबों की
अधमरी भाषा मे
फूक टीका की नकली सास
करते जिलाने का व्यर्थ प्रयास

तब मैं रो पडता।
कैसे कहू जिंदा सच
मुर्दा पुस्तकों मे नहीं मिलते
सरसराते है सच
हर रोज बदलती
ताजातरीन हवा के झोको मे

आज के सच हैं
अभी फूटी हरी कोपलें,
प्रिया-कपोल पर ठिठका गुनगुना आंसू
पानी की सतह पर
छटपटाती सुनहली मछली
इसी क्षण सीने को चीरती
गोली से फव्वारता
तपाक-सर्रार खून
बडे आदमी की अचकन मे टका
अभी-अभी शाख से कटा
गुलाब का फूल

मेरे दोस्त ! उभरो
शुतुरमुर्गियत से
अंधविश्वासों की रेत से गर्दन निकालकर
करो देखने की जुरत
सच अपनी जिंदा बीभत्स खूबसूरती में
खड़ा है हर पल
तुम्हारे रूबरू



लेकिन सच जीना है ईसा की सलीब
कांटों का ताज
सिपाहियों की थूक
ईमानदार आदमी का
डाकुओं की कतार में
होना शुमार

सच जीना है
जिंदगी के विरोधाभास को
प्रकाश का स्वीकार ही नहीं
अंधा अंधकार भी
अहिंसा परमो धर्म ही नहीं
सीटी बजाते गुण्डे की
बहन को नगाती नजर से
उपजी हिंसा भी

है कटु सत्य यह भी
रिश्वतखोर ही होता योग्य

म्यूजिकल चेयस के खेल मे
कुर्सी मिलती उसी को
जो धीमे धीमे चलता
कुर्सी से चिपकता
दूर होते ही दौडता
उसे छल से खासता
यह कटु सत्य
कि शिखर पर जगह है कम
कहीं तब ही साथ सजता मित्रो का

यह सच कि गिरे हुए शरीफ आदमी को
साथी नही वनाती
खूबसूरत लडकी भी



मगर शरीफ आदमी है कौन
उठा है पहले भी यह सवाल
दुर्योधन या धमपुत्र
रावण या राम
चर्चिल या हिटलर
अमेरिका या वियतनाम ?

काले धन की तिजोरी से लिपटा
स्मगलर-सप
या महावारी बटोरता
इनकमटैक्स इस्पेक्टर

आयातित कार के गद्दा म
धँसा स्वामी,
राजनतिक समस्या का
तान्त्रिक उपाय खोजता मत्री

बसो की होली खेलता
क्रातिपसद युवक,
निशाने पर
गोली दागता सिपाही

सुरसा परिवार को
पालता पटवारी
घूस की जमावदी
लेता किसान
कॉफीहाउस मे बहसता
वेशधारी कवि
कलम का कातिल
समीक्षक

देश का रक्षक 'विक्षक' लेता
विमान का नेता,
के० जी० बी० का पिट्ठू
विश्वशाति उपासक ?



दरअसल सच का नहीं है कोई धमकाँटा
सच नहीं है एक ठोस चट्टान

कि जिसके निराकार अनघडपन मे से
विचार की छेनी से तराशा जाए बुत

सत्य प्रवाहमान पानी है
उथला गहरा निमल गदा
प्यास बुझाता, छप्पर फोडता
खेत सीचता आदमी डुबोता
जिसकी धारा को रोक
हम भरते अपने-अपने बतन
देख पाते केवल अपना ही अक्स

जो कहा था मैंने इक्ष्वाकु से
(उसके भाई कवि से नही कहा था)
था वह उस वक्त का ठहरा हुआ पानी
कह रहा हूँ जो आज
है उस वक्त का सहमा हुआ जल
शब्दो के बतन म ठिठका हुआ
पाना है गतिशील सत्य को
तो डूबना होगा बहती हुई धारा म



सच नही है कोई चीज
कि ढूढकर पा लें
रख लें
सहेजकर अपने तालेदार सदूक मे
शादी की कीमती रेशमी साडियो की तरह
जो कभी

पहनी नही जातीं
जिन्हे यदा-कदा निकाला जाता है महज देखने,
या यादों की सुरग से
कोई चमचमाता क्षण चुराने के लिए
और फिर डालकर फिनाइल की गोलियां
सुला दिया जाता है अगली सदियों तलक

मगर जब कोई व्यक्ति करता है एलान—
"दुनिया के लोगो !
कान खोलकर सुन लो
मैंने सच का सही रग खोज निकाला है
बस यही सच है और कुछ सच नही है
लाओ अपने-अपने तालेदार सदूक
भर लो मेरे रग की रेशमी साडियां"
तो टूट पडती भक्तो की भीड

देखो जरा गौर से
क्या रखा है रगो मे
क्या सब रग नही हैं कुदरत के
और जब कुदरत को नही परहेज
किसी भी रग से
या किसी से लगाव
तो हमें ही,क्या

मगर निश्चित की है हमारी पसद
रगो के राजनेताओ ने
एक ही रग की होती है
फौज की वर्दी
और एक ही रग मे सजते है
जलसे जुलूस


हाँ
तुम अगर हो जुलूस मे
तो रहो वही
मैं क्या दू निमनण
बाहर आने का
क्यो कहूँ
जहालत है
कतार म कवायद करना

बैस्टील की ऊँची क्रूर दीवारा को
तोडा था भीड ने
जलाए द्वार उडा दिए द्वारपाल
सडासी कोठरियो मे ठिठुरते नरककालो को
किया आज़ाद
मज़लूम औरतो के लौटा दिए शौहर
छद्मवेशी राजारानी को लिया दबोच
दिव्य सरो को काटने मे
नही किया सकोच

थी भीड वह
भीड के पास ही होता है गला
भीड ही तोड सकती, फोड सकती
जला सकती उडा सकती, गिरा सकती है

तुम अगर जुलूस मे हो
तो रहो वही
लेकिन अगर मैं भीड मे नही हू
तो तुम्हे भी नहीं है हक़
मुझे बुलाने का

बेस्टील की भीड़ उमड़ी नहीं थी यकायक
जुलूस भीड़ पर हमेशा हुआ है
उस भीड़ के पीछे थे कुछ लोग
जिन्होंने मुक्त किया
इंसान के दिमाग को
धर्म की अंधी बेड़ियां
सत्ता के जंजीरी भय
गरीबी के वर्फाए-आलस से

हर भीड़ के पीछे होता है
एक अकेला व्यक्ति
अपने कमरे में एकाकी
सपने बुनता
कागज रंगता
नई दिशाओं की रेखाएँ खींचता बाँचता
उसके पास नहीं होता गला
उसे भीड़ में ढूंढो तो पिछड़ जाता है

मुझे माफ करो
मत करो शामिल जुलूस में
और तुम भी नारे लगाने से पहले
परख तो लो हो किस जुलूस में
बस्टील को तोड़ते सतरंगी जुलूस में
या फौजनुमा यकरंगी जुलूस में
खड़े करता है जो
रोज नए बस्टील

मत भूलो यह भी
हर जुलूस शुरू में सतरंगी ही होता है
एक दिन अगर

होना पड़े तुम्हें अपने ही जुलूस के खिलाफ
तो पैदा करो अपने में
ताने, पत्थर, गालियाँ
सहने की शक्ति भी

मेरे कहे का बुरा मत मानना
जो कहा था मैंने
मनु ने कहा था
श्रद्धा के प्रथम पुत्र को
तुम्हारे पिता तक हैं
और विवेचना है मा

इसीलिए कहता हूँ विस्तार से
समझा था जिसे
अधमुंदी आख के एक इशारे से
इक्ष्वाकु



नजर नजर का है फर्क
अंतर है जाविए जाविए में

जिस किसी ने कहा था शब्द को ब्रह्म
जाना नहीं था 'गोयबल्ज़' उसने
सोची नहीं थी झूठ के दोहराने से
सत्य गढ़ने की नूतन प्रक्रिया
आज शायद वह कहता शब्द को भ्रम

ठाकी जाती कील पैगम्बर क फान म,
नकली भगव मे रेशमी ऐश भोगता
जादुई लफ्जा का फरेबी तिलिस्म
कुर्सी को घेरती मुबारकबादा की भीड
जोहजूरी लील जाती एक साफगो इसाँ

गरीब के खेत मे उगती नारा की फसल
और नेता बेचारा सहता मुर्गा और महल

भाषणा म पिए जाते विश्वशाति के जाम
और सरहदा को फ्लश होते जग के पैगाम

फर्जी ऐश्वय से रोब गाँठता लखपति
कांइएपन से लता करोडा का कज
किसान की भैंस का एक हजार माँगता
दस्तखत दसिया, चक्कर चालीसा
खिलाती चतुर चाट चुराए चुटकुला की
हँसते हाठो से एक शातिर आख

प्यार का इजहार है आम खाने की इच्छा
गुठलियाँ ढूढती थोथी सुरक्षा

यहाँ सात्वना नही है सात्वना
है हसद के मीठे जहर मे सना
झूठे श दो का बस नुकीला तीर

दोस्ती की खिलखिलाहट मे होते पोशीदा
वाता के बघनखा, प्याला के खजर
शहदघुली आवाज म तान, कटाक्ष

नही रहा शब्द का कोई भी अर्थ
अर्थ मे दलदल मे फँसा है
शब्द



चाँदनी नहाया ताज बढ़ा देता है
सैलानी युगल के आलिगन का खुमार
किसे है फुर्सत देख पाए
आला नक्शकारों के कटे हुए हाथ

नक़ली दवाई का व्यापारी देता है घूस
स्वर्ग के सोपान तोदल पुजारी को
इतिजारी भीड के थके आतुर पाँव
भाँप नही पाते नकलीपन पूजा का

कवि को दीखता है बाग का फूल
बिखेरता सुगध बिना किसी गर्ज
भूल जाता खुशबू के छलावे मे
पनपता फूल का निहित स्वार्थ

लोग सुनते हैं रग बिरगी मासूम
चिडिया की चहचहाहट का मदु सगीत
किसी विरले तक ही पहुँच पाती है
उसकी भरपेट नि शब्द डकार

शायर को नजर आता है परवाना
शमा की रोशनी मे झुलसता मँडराता

नजरअंदाज करती पर उसकी नजर
छिपकली की लोलुप लपलपाती जीभ

कंक्रीटी इमारतों से बौनाए बुद्धिजीवी
चढ़ाते हैं हरे ग्रामीण परिवेश पर
थोथी रूमानियत का बेमानी मुलम्मा
नहीं बूझते उस अपार शांति में
गूंगाए मुहों की असंगत चुप्पी

कलाकार की कूची करती है कैद
पनघट की पनिहारिन की कमर का लोच
बनती नहीं भोक्ता उस बीहड़ चढ़ाई की—
पसीना करना पैदा
कमर का कटाव



ओ मार्क्स के बौने चेलो !
देखा है पेट का अजीब इंसाफ
सूखा सख्त बासी निगलता
लून-प्याज से पचाता गरीब का पेट
अमीर का उदर बनकर बागी
फिंकवा देता मेज सजे पकवान

देख नहीं पाए
फ्रायड अनुयायी
विचित्र अवचेतन का खिलवाड़
दबाओ वासना तो लावा की तरह

फट पड़ता आतिशफिशाँ पहाड़
हवा दा वासना की पतली लपट का
तो भी होती राख
सवत्र

चखा गाधी के अनन्य भक्तो ने
कभी स्वय अहिंसा का स्वाद,
अनशनी छात्र कर अनसुनी
कुलपति-कुर्सी को लेते छीन
मर कर पागल बनता शहीद
हमेशा हड़ताल पर रहता राष्ट्र

नही सोचा शकरपथिया ने
कहाँ ले गया मायावाद,
मिथ्या जगत म बने हम गुलाम
हुआ सन्यास पलायन पर्याय
छिपे गेरुए म गाजा चरस
पनपी देश मे
भिखारिया की भीड़

नही छूटता कभी जिदगी का कर्ज
अति की वेदी पर
सब होता बलिदान



मगर बात इतनी नही है सादा
जितना पेट का दद

फूला हुआ सीस
खलासी गुर्दे की
या गुप्तांग विकार

समझता है सो महसूसो
कामयाबी की विफलता
बदनामी शोहरत की
अमीर की गरीबी
मौत की बेहतर जकड़न

कभी कामयाब आदमी की आँख में
देखा है झाँककर
जरूर देखा होगा फिर
पुतली के अंदर
घुटता हुआ धुआँ
अंधा काला पानी
अँधेरा जिसका ठंडक नहीं
पहुँचाता है ठंड,
यहाँ निस्वार्थ किरण चुपके से आ
नहीं चमकाती भावना की कोई भी लहर
वहाँ कुछ नहीं हिलता

कामयाब आदमी किसी के पहलू में बैठकर
इधर उधर की गप्प नहीं हाँक सकता
पार्टी की मछलियों को
आँकती नजर
'हेलो हेलो' करता गुजरता चला जाता
यहाँ मुस्काता वहाँ भिनभिनाता
गुर्राता, हिनहिनाता

होठो की गम मुस्कान से सद आँख छिपाता
कम सम्पर्क के दायरे मे सैकडो को सिमटाता
गुजरता चला जाता है वह

तुम्हारी आँख के बीच उगते जगल को
मैंने देखा है, मशहूर इसान !

मगर याद है मुझे वह दिन भी
जब यहाँ कुछ नही था
बस दूर तक फैला हुआ
एक निरीह हरापन
जिस पर नजर टिकती नही
फिसलती जाती थी
क्षितिज तक
और उसके पार भी

इन गुजिरता चद साला म
तुमन बहुत कुछ कमाया है
चालाकी की आदमकद घास
हजारा पलायना के झाड झखाड,
समझौता-परस्ती के
लालची खरपतवार,
और कांइएपन की काई
घोट रही जो
नीली झील का दम

उस जगल के सामन भी
चन चुकी है सगेममर की सद दीवार
जिसकी नक्काशी म
उभरते हैं कुछ चित्र—

शरीर के मजलिसी रंगों में
पिघलते-उजास में पसरे
लिजलिजी प्यार में लिहुँकते हाथों से
धूप सरसराते काले नाग
मायाओं के अधजल धुआँते मयों पर
इठलाते नापते बीभत्स धुम !

अब तो जंगल का भी नजर आता है
सिर्फ एक अक्स

निर्धन की दीवार
नंगी है
मटमैली, अधकचरी
ऊबड़ खाबड़ धरती-सी
टेढ़ी-मेढ़ी अजीब-सी
गरीब के नसीब-सी

लीपन में फँसे
भूस के
इक्के-दुक्के
तिनके

धनी की दीवार
भी नंगी है
टँगी है बस
एक मौलिक 'पिकासो'

निर्धन की नार
नंगी है

मैली, रूखी
पिचकी सूखी
भूखी नगी
पर बेढगी

चेहरे म वटी
थकान की
हताश
झुर्रियाँ

धनी की नाक
भी नगी है

और सबसे परे
ऊँचे आसन पर बैठ
आत्मा के डाक्टर
जिंदगी के कैंसर का
लिखते मोक्षमयी नुसखा
अनबूझ श्लोको की अनजानी लिपि मे

और वैराग्य की फिनाइल से
लालसा की बदबू दबा
गगातटी आश्रम के वाड मे
मत्र मुग्ध जवान
और माला से जकडे हाथ लिए
मुक्तिमोही बीमारो को
लिटा देते मुक्तिदायिनी खाट पर

लिखा है भागवत मे

हुआ था पूरा
इक्ष्वाकु भी
मृत्यु में खाक
मगर क्या यह जरूरी है
तुम्हारे साथ भी हो यही ?



भविष्य की आँख पर
पड़ चुका मोतियाबिंद

आँख के झरोखे से
देखते हैं लोग
मौत के
बीहड़ अधकार का
फैलता
पसरता
अनत विस्तार

सालो पुराना
बोसीदा दिमाग
टँगे हैं जहाँ
कसाई के बकरे
मुर्दा विचार

मौत है जीवन का अत
मौत जिदगी की दुश्मन है,
कहते व्याख्याता

विपरीतार्थक शब्द

मेरे दोस्त !
मौत के डर से
कितनी कितनी बार भागे हो
ज़िंदगी से तुम
कितनी कितनी बार गुज़ारा है ज़िंदगी को तुमने
मौत की तैयारी समझ,
कितनी बार
मौत की झल्लाहट से ऊब
तुमने ज़िंदगी को
दिया है खिताब
सपना का

ज़िंदगी स्वर है
मौत सन्नाटा,
नही जानते व्याख्याता
जन्मा है स्वर
चुप्पी की कोख से

दूर किसी अनातवन मे
उमडते बिखरते झरने के
अनवरत शोर-सा
सुना है
सन्नाटे का
अनहद नाद ?

जीवन दरिया है
हिमशिखर है मौत,

नही जानत व्याख्याता

वफ सिफ है नाम
मुन्जमिद पानी का
एक ठहरा हुआ पानी है
एक वहता हुआ पानी है

ज़िदगी पर्दे का उठना है
पटाक्षेप है मौत
नही जानत व्याख्याता
मेक-अप का
कमाल

इधर मरता रामलीला
का रावण
उधर लगा
दाढ़ी जटा
जी उठना वशिष्ठ

जिन्गी वसत है
मौत है शीत
नही जानत व्याख्याता
बीज का इतिहास

माना जो सदिया म
बहार म ल अँगड़ाई
फूटता कारन-कापल

तुम्हें लगता है

तुम नहीं थे कभी
या नहीं रहोगे
कभी उम्र के
तेज दौड़ते
मीलपत्थरों को देख
बूढ़े होने का
हुआ है एहसास ?

अस्सी वर्षीय दूल्हे के साथ
षोडशी दुल्हन देख
लोग हँसते हैं
बूढ़ा नहीं

देखा नहीं दादाजी को
फर्श पर घोड़ा बन
उछलते हिनहिनाते
और नवजात शिशु का
मासूम गाम्भीर्य

वह अभिनेता ही क्या
जो पर्दा गिरने के
क्षण को
बनाए सोच का
मरकज
और हर पल बदलते
किरदार को
रख दे ताक पर

जानना चाहते हो
ज़िंदगी का रहस्य

क्या मौत नहीं है
दियासलाई की नोक पर
जमी हुई आग ?



मौत अगर
है पुलिया
तो अमरत्व क्या
कभी समाप्त न होने वाला
अनादि
अनत
पुल
क्या सारी तलाश
उसी बिना गतव्य के
पुल की है
मृत्योर्मा अमत गमय ?

कुर्सी पर बठ
वक्ते वक्ता की
अघघटी बौछर पर
क्यो हिलाते टाँग
मशीनी पुर्जे-सी

अकेल सफर की

बोरियत खाई मे
क्या नही डालते
पुस्तक, पत्रिका के
उडते हिलते शब्द
रेडियो, टेप के
काँपते लरजते सुर
फ़िल्म, राजनीति की
निरथक गप्प
भागती सडक के
अनदेखे दृश्य

नीरव मन मे
तडप उठती
अनगल विचार की
कर्कश भौंक

उड उड जाता
चेतना-बेताल
जा लटकता
वासना-वृक्ष पर

नही चाहते हम
रुके वहीं
मिठाई के जिह्वा से
छूने का पल

घटे नही
तीसरे पग की
पहली चुस्की का

हल्का सरूर

प्रथम प्रेयसी का
चिकनी पखुडी-सा
होठों का स्पश
शहद-सास का पान
रुके नही

सभोग के बाद का
सिगरेट का कश
हो असमाप्य

मगर अनत कार्यों से
कहाँ पहुँचा मनुष्य

देखी अमर खाऊ की
मुटल्ली रक्तचाप

अमर पियक्कड की
नाली शैया ?

धुआती चिमनी का
फँफडा कैसर

अनत प्रेमी का
भावशूय मन

पाना है अमरत्व
का पूर्वाभास

क्या नहीं पर्याप्त
राशन, सिनेमा
मैच, औषधालय
बैंक, दुकान
की असंख्य कतारों में
खड़े रहने का
टाँगतोड़
पसीनापोंछ
अनुभव

देखा है कभी
अमरत्व इच्छा
का बीभत्स अंजाम
पुरातत्ववेत्ता की
अंगुलियों में
बिखरता
मिस्र की ममी का
लाफ़ानी जिस्म

उपजी कहाँ से
कल्पना अमरत्व की
चरस के नशे का
कालजयी एहसास
क्या नहीं ज़िम्मेदार

जानते हम
जितनी गहरी प्यास
उतना पीने का मज़ा
पीने और प्यास के

क्षणिक बदलाव
क्या नहीं उभारते
नाटकीयता

और क्या इसी में नहीं है
सार्थकता
हर जन्मते मरते पल की ?



दिखाया है तुम्हें
कई किताबों ने
स्वर्ग का स्वप्न

रत्नमण्डित
उच्च इन्द्रासन से
कुछ ही गज दूर
आसन पर बैठ
आँखें फाड़ी हैं
अर्धनग्न अप्सराओं
को देख
कैबरे नृत्य

एक हाथ में ले
आबे जमजम का जाम
हम-आगोश हूर के
गुदाज़ बदन का
पढ़ा है भूगोल

सर पर लगा "हेलो"
हाथो मे "हाप"
उडते नम बादलो पर
किया है विश्राम

मगर दिये हैं दु स्वप्न
उन्ही किताबा ने

रोज़े महशर का
दिल दहलाता
ढोल

ताण्डव नत्य
प्रलय का

मुँह बाय कब्रे
पुनर्जीवित शव
गुनाहा का हिसाब

और जानलेवा आग
दोज़ख की

स्वप्नो पर विश्वास
करता मन का
शिशु

कि पीकर
दरिया मद्य का,
नही होगा

हैंग ओवर

मांसल हूर के
वजन से
नहीं थकेगी
जांघ

कीड़ों से
खाए गए जिस्म
पड़े होंगे,
अस्तित्वहीन पांवों पर

नैन दहति पावक
आत्मा को
झुलसेगी
दोजख की आंच

जानता मन का
वयस्क
सपनों का सत्य

शरीर को थकाए बिना
नहीं देता आराम
बादल सरीखा
बिस्तर भी

मांगती रति क्रीडा
थोड़ा अंतराल

सुनकर
हाप की टेऊँ टेऊ
अवश्य पक्ते
कान

स्वग-नरक का भय
क्या नही है 'गब्बर सिंह'

आज भी कोई जब
डरता है
झपकाता पलक
याद आता निमि
जो बना प्रतीक
स्वग के कोप का

शरीर से मोक्ष माग
क्या हुआ मुक्त
इक्ष्वाकु-पुत्र ?



तुम भी मुक्ति को
ऐसे देखत हो
मानो यह शरीर
एक पिंजडा है
जिससे छूट
भरोग उडान
आजाद पक्षी की तरह

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible] है [illegible]
[illegible] है [illegible]

मुक्ति [illegible] है आवा[illegible] मुक्ति
है मुक्ति जीवन में मुक्ति

मुक्ति नहीं है मौत के बाद
वापिस न आना,
बैठ जाना पूर्ण के चरणों में
हो कृतकृत्य
हो जाना उड़ाकू
आतिशबाजी की हवाई की तरह

मुक्ति नही है इसी वक्त
अपने आप स

मुक्ति है शब्दा से
फँसते हैं जिनके जाल म
नासमझ मछलिया की तरह

शब्द जो झूठे नही हैं
मगर इस्तेमाल से
घिस गए हैं
और खा बठे ह
अपन सही अथ

मुक्ति है मत्यु के
भय से

जो कभी पैदा नही हुआ
वह कभी मर सकता है
और जो रोज मरता है
उसके मरने पर क्या शोक

जब टी० वी० नही पकड पाता
दूरदशन के
ध्वनित दृश्य
हम बदल नही लेते

यदि डर नही है
ता वही है माक्ष

मुक्ति है किताबों से,
लिखे हुए जवाबों की स्याही
फैल जाती पुराने कागज़ात पर

लिखे जवाब उतरते पुस्तकों से
पंडितों पादरियों की जेब में

अगर हाथ उलझे हों किताबों से
तो कैसे होगा काम ?

हम में दम है तो फेंकें सभी किताबों को
पी नहीं पाएँगी फिर बच्चों का लहू
नहीं छाएंगे शहरों पर घनेरे बादल
नहीं ठिठकेगी तरजते दिल की धड़कन
जब पड़ेगी दरवाज़े पर पड़ोसी की दस्तक

मुक्ति नहीं सोती हुई बीवी
और राहुल को
देना त्याग,
हाथ में लेके कमण्डल
जंगल को प्रस्थान

मुक्ति है जीवन को जीना
मगर ताज़गी के साथ

मुक्ति है रिश्तों को समझना
एक नाज़ुक कच्चा धागा

मुक्ति है बदलना नज़रिए का

फिल्म के खलनायक को
बलात्कार करते देख
रुकती नही बच्चे की रुलाई
समझते माँ-बाप
छाया-आकृतियो का
मसनवी ससार

मुक्ति है फेंक देना
पूर्वाग्रहो की ऐनक
मुक्ति मोतियाबिंद की
शल्य चिकित्सा है

देखा नही विस्तर पर
तडपते शरीर को
सपने के डर से

मुक्ति स्वप्न से
जाग जाना है

सोचते तुम
वह वहाँ है
मैं यहा हूँ
तडफडाते उस तक
क्योकर पहुँचू

मुक्ति है यह ज्ञान
तू उपकरण है
वह बिजली का प्रवाह

यह विश्वास
कि इसी में है उसकी सार्थकता
वह तुम्हारे बीच से आकर वहे



डेढ़ सौ साल पहले
नाचा था नीत्शे
ईश्वर मर गया !!!

ईश्वर था ही कब
जो वह मरता

अगर थी बात
मनुष्य के दिमाग म
ईश्वर के ख्याल की
तो वह कहाँ मरी

यदि वह होता तो
क्यो बनता विधान
बीजने को अण्ड
किए जाए जाया
लाखो शुक्राणु

गिराने को
पजमुर्दा पत्ते
उठाए जाएँ
तूफान

बद्री केदार
जा रहे भक्त
लुढ़काए जाए
अलकनदा म

करने को तैयार
आज का आदमी
किए जाएँ प्रयोग
बदशक्ल बदरो के

मर गया होता
जो उसका ख्याल
न आते अमरीकी
स्वामियो कि शरण

नही काटता भाई
ज्वालाजी मे
अनुज का सर

वैज्ञानिका की भीड
उमडती नही
तात्रिको के द्वार

न करते राज
मुस्लिम देशो म
मौलवी मुल्ला

यदि वह नही है
क्या उसका ख्याल

दरअसल यह है भी
और नहीं भी
जगत नहीं है कारखाना,
यह नहीं प्रयोगघर

जगत नहीं है
साम्राज्य
यह नहीं
राजा

जगत नहीं है
चमचा-बैठक
यह नहीं
हुक्का गुड़गुड़ाता
जमींदार

जगत नहीं है
परिवार
यह नहीं है
पिता, माता
बंधु सखा

अरबों साल पहले
मजाक की मजाक में
उसने की ईजाद
विश्व की मशीन
दबाना बिंदु-बटन
था अंतिम कृत्य
फिर नहीं देखा

किसी ने उसको,
पिस गया महीन

जर्रा जर्रा बिखर गया
कायनात मे
जसे कभी न था
उसका वजूद

फूल पखुडी पखुडी
गिर जाता है
देर तक रची रहती
उसकी महक,
साल दर साल
बसी रहती याद
दर्खे मखमूर अदा की
एक झलक

तभी तो प्रत्येक
अश ने
की है 'फुल' की
तलाश



किसी न ढूढा
सुनहरी हसीना के
हर खूबसूरत
कटाव मे

नशीली आँखों में
संसार सा फूला
पहली मिलन

होठों की
थामनी को
खामोश पीते
होठ

सान्निध्य स्पर्श की
हर सीत्कार

गोश्त में
गोल गम सुबक

नीवीबन्ध की
रस्मी इन्कार करती
रेशमी गाँठें

बदन से बदन के
मिलने की छपाक

चरमबिंदु का
कालरोध क्षण

ढूँढा उसी 'कुल' को
और शायद पाया भी



किसी ने तलाशा
सुनहरी मोहरों की
हर खूबसूरत
खनक मे

गुप्त गोदामों की
गुमनाम गिरफ्त मे
भूखे लोगों से दूर
सड़ता अनाज

गिरवी ग़रीबों के
घिघियाते
कर्ज माँगते हाथ

मजदूर यूनियन के
गरजते नेताओं की
हड्डियाँ चूरती
दोस्त-पुलिस की
मस्ताना लाठियाँ

सौगुने फायदे को
सहज दिलाती
जन्मसिद्ध अधिकार-सी
गर्मी माँगती
सरकारी मुट्ठियाँ

ढूँढा उसी 'कुल' को
और शायद पाया भी



किसी न खोजा
कट सुनहरे सरो के
ज़मीन पर लुढकने की
हर ख़ूबसूरत
धनक मे

निकालकर खडग
निर्दोष शहरियो का
कत्ले-आम

भागती औरतो को
केश से पकड
खुरदुरे खेतो मे बिछा
सामूहिक बलात्कार

सुनकर जयजयकार
गज़ भर लबे हो
कीडो-सी भीड पर
एक मगरूर दृष्टिपात

खोजा उसी 'कुल' को
और शायद पाया भी



कोई अन्वेषण है
सुनहरे लफ्ज़ो का

सगतराश,
सुनहरे रगो का
कलमकार

उसका 'कुल' है
नगे पतझड के
काले पेड का
नाजुक सिलहट

बूढे हब्शी की
माथे की झुरियो पर
कॉपती रोशनी का
अदभुत खेल

पपीहे की
निरथक रट से
छानकर रचाई गई
बाँसुरी की धुन

जिंदगी की
हर छोटी हरकत से
ले गुलाबी अक
नाची गई थिरकन

घटनाओ के
तूफानी थपेडो से
सालिम उभरती
चरित्रो की चट्टाने

बेहूदी बकवास से
परखा
छाटा गया
एक मैनीक्रेज
जुम्ला

अर्थों को
पत दर पत
खोलत
कल्पना के
शिखर चमकात
बिम्ब

किया अन्वषण
उसी 'कुन' का
और शायद पाया भी

□

एक तलाश और भी
बेमानी से जीवन के
मुसलसल मुजरे में
सुनहरे ख्याला की
तवायफी छनक

विरोधाभास क

अँधेरे जगल मे
विचार की पगडडी पर
चलने की ललक

परिभाषा के
पतले
रेशमी धागे से
अथ के पागल साँड को
बाँधने का जतन

तर्क की
हिलती झूलती
रस्सी से
'नियागरा' को
पारने का
प्रयत्न

रहस्य के
पिघलते पारे को
चिक्नी हथेली से
पकडने का प्रयास

दर्शन के
भारी
पोथो मे
अज्ञात के नामकरण
की उद्दड
कोशिश

समय के बदलते
रगो से
मेल खाने की होड म
हाँफते
सत्य के गिरगिट ने

ढूढा है उसी 'कुल' का
और शायद पाया भी है

□

तुम भी भागे हो
पूर्ण के पीछे
जैसे
इला के पीछे
इक्ष्वाकु

कभी पकडी
साकार इला
कभी निराकार
सुद्युमन
और कभी किंपुरुष
जो साकार है
और निराकार भी

और जब कुछ नही समझे

तो दौड़े
संतो के चरणों म



संतो के कानो ने
किया अनथक यत्न
उस
सुनहरे सूरज के
अश्वचापो की
अश्रव्य धमक सुनने का

सुनसान मरुस्थल की
जधाती लू म
मिला किसी को
पाक पैगाम

'कोहेतूर' की
जलती हुई झाडी मे
पाया किसी ने
निषेधात्मक स्वर

सलीब की पीडा को लाघ
गद्दारी स बेपरवाह
किसी ने की बात
क्षमाशील पिता से

ढूंढा सभी संतों ने
उसी 'मूल' को
और शायद पाया भी



सोचा तुमने
उलझाव से बचाव
इसी में है
विवेक और संयम की सलाइयों पर
बुनो जिंदगी को

फिर कह दिया
किसी ने
बुनते क्या डिजाइन
हो चुका नाप-सोच,
अंकित वीडियोटेप पर
हर छींक
हर अँगड़ाई का
चित्र

और तुमने
मान लिया

मगर जरा सोचो
बदा है सब कुछ
तो बदी नेकी,

कुरुक्षेत्र के
खूख्वार मैदान मे
निष्काम कर्म का
किया किसी ने आह्वान

बोधिवृक्ष की
निश्छल छाँव तले
बूझ गया कोई
मध्य मार्ग का
अनुपम रहस्य

दु ख की चक्की मे
पिसकर ही बनी
अह के गदुम से
विवेक की रोटी

घिसा
सघर्ष के सिलबटटे पर
विवेक
तो ही उभरा
समत्व तिलक

हर गुजरते पल के
चकमक से टकराकर
पैनी हुई धार
चतन्य चाकू की

ढूढा सभी सतो ने
उसी 'कुल' को
और शायद पाया भी



सोचा तुमने
उन्माद से बचाव
इसी म है
विवक और सयम की सलाइयो पर
बुनो जिंदगी को

फिर कह दिया
किसी ने
बुनते क्या डिजाइन
हो चुका नाप-सोच,
अंकित वीडियोटेप पर
हर छीक
हर अँगडाई का
चित्र

और तुमने
मान लिया

मगर जरा सोचा
बदा है सब कुछ
तो बदी नेकी,

बदी भी बदी
फिर बेमतलब है
कुछ करना, न करना
क्या सारा मजा
इसी बात मे नही है
कि कुछ नही है तय

हर बढता कदम
बनाता अपना ही माग
हर पग पर एक चौरस्ता

क्या हस्तरेखा नही
हाथ की सिलवट
और
मस्तक की लकीर
त्यौरी का चिह्न

क्या भाग्य नही
तुम्हारे हाथो मे
पकडे हुए कलम
कमचे
कस्से
कूची म

क्या भाग्य नही
तुम्हारे पैरो से बँधा
कभी खुलता
कभी बँधता

तुम मे खेलता हुआ 'पूण'
क्या नही है रसिया
ऊनड पगडडिया पर
बाउल की तरह
डोलता नाचता

क्या लीक से
हटने का
नही चाहिए
तुम्हीं मे दम

उठता सवाल
कि जाएँ कहाँ
लीक की बेघास
बिला काटा
सुरक्षा छोड !

यह चिता नई नही
जब भी छोडी लीक
लगा है डर
अनागत के रीछ
अप्रत्याशित के शेर
अनिष्ट के भेडिए का

सवाल उठता यह भी
कि लीक
छोडी ही क्या जाए
कहाँ से होकर जाती
नाले पारती

नदियाँ टापती
कही तो पहुँचाती

सच है यह सब
मगर पुराना
अब यह लीकें
कही नही जाती

ज्ञान की लीक पर
देखो चलकर
मिलती, बिछुडती
लौट लौट आती
गोलाकार घूमती
सैकडो पगडडियाँ
भूल भुलैया म
झोकती आयु पयन्त

टोने से तुम
बन जाते गिद्ध
उडते ऊपर
आसमान मे
देखती नजर
दरिया तैरती
मछलिया का मास

योग की लीक पर
देखो चलकर
गडडे तत्र क्रिया के
जिनकी राख मे

फुफकारते
सिद्धि-सप
सर चकराती
ऊँचाइयाँ
घूमते जहाँ
बेवजह हँसते
हरहरात पागल

सुबह तीन बजे
जगे हुए
नाक अँगुलियो मे
पकडे हुए
शाकाहारी
लोग ब्रह्मचारी
जिन्हें कुछ नही हुआ

भक्ति की लीक पर
देखो चलकर
दलदल
अतिरंजित
भावविह्वलता का

इधर नाचते
गाते हँसते
अश्रु बहाते
निपट नाकारे
पोगा पडित

आता मर
मूर्तिपूजा का
अंधविश्वास की
उड़ती रेत
कर देती बंद
ज्ञानचक्षु

खड़े है राह में
सब पथिकों को
नक भय की
बंदूक से धमकाते
डाकाजनी करते
ढोंगी पंडित

कर्म की लीक पर
चलो अगर तुम
थोड़ा आगे
भाग्यवाद का
अंधियारा वन

बैठी ठाली
गप्प लगाती
इंतिज़ार में
स्वयप्रकाश की
अकर्मण्यता

दूजे पीते
दारू अतिक्रम की
दौड़ हाँफकर

तप करते
आत्म विस्मरण का

है बहुत सुगम
हो जाना पथभ्रष्ट
क्योंकि
रास्ता के नाम
वही हैं
मगर
रास्ते बदल गए हैं



था कृष्ण का जीवन
ज़िंदा
रस से सराबार

वह गांव के खालिस
मक्खन का शैदाई
जल जीवों का
शिकारी
मारता था भीमकाय राक्षस
दे कराटे हाथ

हैमलिन के 'पाईड पाइपर सा'
बांसुरी की धुन से
भोली गोपियों को

सब्जबागो मे बुला
खेलता यौवन से
मारी सारी रात

नही थी युधिष्ठिर की
आदश के आडम्बर मे
लिपटी अकमण्यता
कौरवा के हथकडा का जवाब
न ही अजुन की
विरचित की भाषा म उलझी
कायरता,
उसका उत्तर था
यथाथ की
मजबूत जमीन पर खडा
कृष्ण का कमयोग

कहा था जो कृष्ण ने
क्या वही लिखा है गीता मे
कहाँ है कम पर उसकी
जीवत मीमासा
क्या यह नही सच
कि कृष्ण के कहे को
गाड दिया गया
गहरा
ताकि जी न सके कोई

योग की अति से विरक्त सिद्धाथ
भागा जगल म,

हुआ तप से परेशान
सुदरी के हाथ से बनी
मीठी खीर को खा
बना बुद्ध

कहा उसने
ढीले न छोडो तार
न कसो ज्यादा
रखो वह मध्यमार्गी कसाव
जहाँ जीवन से उभरता है
मधुर सगीत

उसने कभी कहा
कि भिक्षु है आदश
पूरे समाज का
क्या भिक्षु का जीवन
है मध्यमाग ?

□

अगर भूला नही रस्ता
तो विवस्वान

आज भी निकलती
उसके अतर से
स्वत स्फूर्त ऊर्जा

रिसी स नहो माँगनी पड़ती
भीख

ज्ञान के चिरतन यज्ञ म
द अह की आहुति
प जाना ऊष्मा
सवव्यापी करुणा की,
समभाव का प्रकाश

उसका मम
आरोपित नही
बहता उसके स्वभाव स
पहाड के दिल से
फूटत
चश्मे सा

सही रास्ते पर चला था
इक्ष्वाकु भी

वह सौ पुत्रा का जनक
नही हुआ
भोग से विमुख

क्रोध की जरूरत पर
बिना अपराध भाव
किया निष्कासित
विकुक्षि

उसे नही था भ्रम
कि
सूर्यवंश का संस्थापक
नही पा सकता
मोक्ष !



आज नही फुर्सत
आदमी को
चढने की
फलसफे के फिसलन
मल्लखम्भ पर

अँधेरे बदबूदार
कमरो की सडांध का वासी
महँगाई की
अजगरी पकड से बदहवास
बीवी की कर्कश सच्चाई का
भोक्ता

गगनचुम्बी इमारतो की
साठवी मजिल से
चारो तरफ फैली
साठवी मंजिलो का द्रष्टा
बास की जोरदार
दुलत्ती का आदी

भीड की रेलपेल म
पिच्चपिच्च हुए
आदमी के पास
यहाँ बची है शक्ति
कि यह पूछे
प्रश्न
सृष्टि के, स्प्टा क
या ढूढे
जिंदगी का मक़सद

क्या उसके लिए
काफी नही है
कुछ सादा बातें,
जिन्हे वह परखे
आजमाए
और ठीक पान पर
बन जाए

जैसे यह
कि जिंदगी नही मौत की तयारी
जिंदगी अपने आप मे मैनीखेज

मोक्ष जीवन से नही छुटकारा
मोक्ष है रिहाई स्वनिर्मित कद से

इस बात म नही कोई शम
कि जिंदगी दे मजा
हर किस्म का
समस्या है केवल तब

जो जिएँ हम
सिर्फ मज़े की ख़ातिर

चैतन्य माँगता है
हर लम्हा
हर पल
नई नज़र
नया दृष्टिकोण
जीना चाहता
हर बदलते रिश्ते को
एक अल्हड़
ताज़गी के साथ

तो जीवन को लें
बस जीने की प्रक्रिया
जिएँ उस गाम्भीर्य से
कि हो जाए मज़ाक की इन्तिहा

उगने दें अंदर
निर्विचार का वृक्ष
और खाएँ कभी कभार
उसका भी फल
मगर
आठों पहर न बैठें
नासिका पकड़

जीवन को जानें
एक नाटक
जिसका स्क्रिप्ट

लिए रहे हमी
और गफलता का जोड़
किरदार की अदायगी के साथ



छींके वैवस्वत मनु
हवा के प्रवाह म
पैदा हुआ
इक्ष्वाकु

अपन ज म के बारे म
यह गाथा
इक्ष्वाकु न
गढी थी स्वय

नही देखा जाता
कथा का
शाब्दिक सत्य

मनुष्य सब समझता है
कि उसका ज म
एक अतिथि
अकारण, अकस्मात
छीक-सा है
तभी करता शुरूआत
रहस्य के गभ म पहुचने की

बूझना चाहते हो
तो पूछो
अपने मन मे विराजमान
इक्ष्वाकु से।

□□

